ISSN-2582-5976
www.krishakbharti.in
मध्य भारत
कृषक भारती
हिन्दी भाषी राज्यों में प्रमुखता से पढ़ी जाने वाली कृषि पत्रिका
उत्तराखण्ड

हिमाचल प्रदेश की पहाड़ियों में प्राकृतिक खेती: एक सतत कृषि क्रांति

अजय ममगाईं और नवप्रभात नेगी
माउंट वैली डेवलपमेंट एसोसिएशन, गांव- डोनी, जिला टिहरी गढ़वाल, (उत्तराखंड)

भारत के उत्तरी क्षेत्र में बसा हिमाचल प्रदेश अपने आश्चर्यजनक परिदृश्य, विविध पारिस्थितिकी तंत्र और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। हालाँकि, राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों की खड़ी जमीन और नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र ने कृषि को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। हाल के वर्षों में, प्राकृतिक खेती के रूप में जानी जाने वाली एक स्थायी कृषि पद्धति ने हिमाचल प्रदेश में महत्वपूर्ण गति प्राप्त की है, जिससे इन पहाड़ियों में खेती के तरीके में बदलाव आया है। यह लेख क्षेत्र में प्राकृतिक खेती के उदय, इसके लाभों, चुनौतियों और आगे के रास्ते की पड़ताल करता है।

प्राकृतिक खेती क्या है?: प्राकृतिक खेती, जिसे अक्सर शून्य-बजट प्राकृतिक खेती के सिद्धांतों से जोड़ा जाता है, एक कृषि-पारिस्थितिकी दृष्टिकोण है जो रासायनिक इनपुट के उपयोग को कम करता है और मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादकता को बढ़ाने के लिए प्राकृतिक प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करता है। यह विधि फसल चक्रण, मिश्रित फसल और गाय के गोबर, मूत्र और खाद जैसे प्राकृतिक उर्वरकों के उपयोग जैसी तकनीकों पर निर्भर करती है। इसका लक्ष्य एक आत्मनिर्भर कृषि प्रणाली बनाना है जो प्रकृति के साथ सामंजस्य में हो।

हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक खेती का उदय: हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक खेती की ओर आंदोलन ने 2010 के दशक की शुरुआत में गति पकड़ी, जो काफी हद तक स्थानीय किसानों, गैर सरकारी संगठनों और सरकारी पहलों के प्रयासों से प्रभावित था। राज्य सरकार ने किसानों के सामने आने वाली पर्यावरणीय और आर्थिक चुनौतियों को पहचानते हुए 2018 में प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना (पीकेउवाइ) शुरू की, जिसका उद्देश्य पूरे राज्य में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना है।

पहाड़ों में प्राकृतिक खेती के लाभ

पर्यावरणीय स्थिरता: ● हिमाचल प्रदेश की पहाड़ियों की खड़ी ढलानें और नाजुक मिट्टी कटाव और क्षरण के लिए प्रवण हैं। प्राकृतिक खेती जैविक पदार्थ संवर्धन और कम जुताई के माध्यम से मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करती है, जिससे मिट्टी का कटाव कम होता है।

● रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों से बचकर, प्राकृतिक खेती भूजल संदूषण के जोखिम को कम करती है और जैव विविधता को संरक्षित करती है।

2. आर्थिक व्यवहार्यता: ● प्राकृतिक खेती का शून्य-बजट पहलू बाहरी इनपुट पर निर्भरता को कम करता है, जिससे खेती की लागत कम होती है। यह विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों के लिए फायदेमंद है जो हिमाचल प्रदेश के कृषि परिदृश्य पर हावी हैं। ● प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों ने बेहतर पैदावार और उपज की गुणवत्ता की सूचना दी है, जिससे बाजार में कीमतें बढ़ रही हैं, खासकर जैविक उत्पादों के लिए, जिनकी उच्च मांग है।

3. स्वास्थ्य और पोषण: ● प्राकृतिक खेती यह सुनिश्चित करती है कि उत्पादित खाद्य पदार्थ हानिकारक रसायनों से मुक्त हों, जिससे उपभोक्ताओं के लिए बेहतर स्वास्थ्य परिणाम प्राप्त होते हैं। ● विविध फसल प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित करने से उपज का पोषण मूल्य भी बढ़ता है, जिससे किसानों और उपभोक्ताओं दोनों को लाभ होता है।

4. जलवायु लचीलापन: ● प्राकृतिक खेती में निहित कृषि-पारिस्थितिकी प्रथाएँ फसलों को जलवायु परिवर्तनशीलता के प्रति अधिक लचीला बनाती हैं। मल्चिंग और इंटरक्रॉपिंग जैसी तकनीकें मिट्टी की नमी को बनाए रखने और फसलों को चरम मौसम की घटनाओं से बचाने में मदद करती हैं, जो इस क्षेत्र में तेजी से आम हो रही हैं।

प्राकृतिक खेती को लागू करने में चुनौतियाँ: इसके लाभों के बावजूद, हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक खेती को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

● **ज्ञान और जागरूकता:** पारंपरिक से प्राकृतिक खेती में बदलाव हेतु कृषि संबंधी सिद्धांतों की गहरी समझ की आवश्यकता होती है। कई किसान अभी भी इन प्रथाओं से अपरिचित हैं, जिसके लिए व्यापक प्रशिक्षण और सहायता की आवश्यकता होती है।

● **बाजार तक पहुँच:** जबकि जैविक उत्पादों की माँग बढ़ रही है, प्राकृतिक कृषि उत्पादों हेतु प्रीमियम मूल्य देने वाले बाजारों तक पहुँचना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासकर दूरदराज के पहाड़ी क्षेत्रों में।

● **प्रारंभिक संक्रमण काल:** प्राकृतिक खेती को अपनाने के शुरुआती वर्षों में पैदावार में गिरावट देखी जा सकती है क्योंकि मिट्टी पुनर्जीवित होती है और नई कृषि पद्धतियों के अनुकूल हो जाती है। पर्याप्त समर्थन के बिना यह संक्रमणकाल किसानों के लिए आर्थिक रूप से तनावपूर्ण हो सकता है।

● **नीति समर्थन:** हालाँकि सरकार ने सहायक योजनाएँ शुरू की हैं, लेकिन पूरे राज्य में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए लगातार और मजबूत नीति समर्थन आवश्यक है।

आगे की राह: हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक खेती की प्रथा को बनाए रखने और उसका विस्तार करने के लिए कई कदम उठाए जाने की आवश्यकता है:

क्षमता निर्माण: किसानों को प्राकृतिक खेती की तकनीकों के बारे में शिक्षित और प्रशिक्षित करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है। यह किसान फील्ड स्कूलों, कार्यशालाओं और खेत पर प्रदर्शनों के माध्यम से किया जा सकता है।

अनुसंधान और विकास: कृषि विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों और किसानों को शामिल करते हुए सहयोगात्मक अनुसंधान प्राकृतिक खेती की तकनीकों को परिष्कृत करने और क्षेत्र-विशिष्ट समाधान विकसित करने में मदद कर सकता है।

बाजार संपर्क: सहकारी समितियों, किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) और डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से बाजार संपर्कों को मजबूत करने से किसानों को उनकी उपज के लिए बेहतर मूल्य प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।

नीति और वित्तीय सहायता: प्राकृतिक खेती के इनपुट के लिए सब्सिडी और जैविक प्रमाणीकरण के लिए प्रोत्साहन सहित बढ़ी हुई नीति समर्थन, अधिक किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।

डेटा और आँकड़े

कृषि क्षेत्र: हिमाचल प्रदेश में लगभग 89ः भूमि पहाड़ी क्षेत्र में आती है, जहां कृषि एक चुनौती है।

प्राकृतिक खेती का प्रभाव: 2018 में, हिमाचल प्रदेश सरकार ने 50,000 किसानों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा था। 2022 तक, 20,000 हेक्टेयर से अधिक भूमि को प्राकृतिक खेती के अंतर्गत लाया गया था।

उपज में वृद्धि: प्राकृतिक खेती अपनाने वाले किसानों ने देखा कि उनकी उपज में 10-15% की वृद्धि हुई और उत्पादन लागत में 20-30% की कमी आई।

प्राकृतिक खेती के तरीके: प्राकृतिक खेती एक ऐसा दृष्टिकोण है जो स्थिरता, प्रकृति के साथ सामंजस्य और सिंथेटिक उर्वरकों और कीटनाशकों जैसे बाहरी इनपुट पर न्यूनतम निर्भरता पर जोर देता है। प्राकृतिक खेती में उपयोग की जाने वाली कुछ प्रमुख विधियाँ इस प्रकार हैं:

1. जीवामृत (जैव-वर्धक)-

उपयोग: इस जैव-वर्धक को मिट्टी में लगाया जाता है या सूक्ष्मजीवी गतिविधि को बढ़ावा देने और मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के लिए पत्तियों पर स्प्रे के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

लाभ: जीवामृत मिट्टी को लाभकारी सूक्ष्मजीवों से समृद्ध करता है, पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाता है और स्वस्थ पौधों की वृद्धि को बढ़ावा देता है।

12/2022-23